मेरा मत...

मैं कभी आदर्श विद्यार्थी नहीं रही। एक बार तो 54 विद्यार्थियों की कक्षा में मेरा स्थान 32 वें के आसपास था। मैं स्कूल के बारहवें साल में सांस्कृतिक कप्तान बन पाई। जाहिर है कि मेरी अधिक रुचि संगीत और कलाओं में थी। एक महाविद्यालय की प्रवेश–परीक्षा में उत्तीर्ण हुई और ललित कलाओं की हवा का पहला झोंका महसूस किया, जिसने मेरे जीवन को हमेशा के लिए बदल दिया।

और इस तरह मैंने 5 अकादमिक साल कलाओं को समर्पित कर दिए, जिनमें से शुरुआती 3 साल सच में महत्त्वपूर्ण थे। मेरा दिमाग कई तरह की नई सूचनाओं की भरमार से घूम रहा था। मेरी रुचि इतिहास और संस्कृति में थी और अचानक..... सब समझ में आ रहा था। अध्ययन के इस क्षेत्र की प्रकृति इतनी बहुविषयक थी कि वह हर चीज के साथ जुड़ जाता था और उसे महत्त्वपूर्ण बना देता था। मैंने स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण की – गोल्ड मेडल और निपुणता के पुरस्कारों के साथ।

कम ही लोग होते हैं जिन्हें अपनी 'नौकरी' से प्रेम का सुख–साधन प्राप्त होता है, और मैं उन्हीं में से एक हूँ। मैं चाक्षुष कलाएँ (विजुअल आर्ट्स) सिखाती हूँ और स्कूल तथा कॉलेज, दोनों में व्याख्यान भी देती हूँ। मुझे विशेष तौर से अन्तर्राष्ट्रीय बकालौरिएत प्रोग्राम के तहत पढ़ाना पसन्द है क्योंकि उसकी पाठ्यचर्या में कला–शिक्षण के लिए अनुकूल लचीलापन है। मैं अपनी कक्षा की शुरुआत अपने विद्यार्थियों को समझने से करती हूँ और धीरे–धीरे कला के उन क्षेत्रों की ओर बढ़ती हूँ जिनमें उनकी रुचि दिखाई देती है। उन पेशों को ध्यान में रखते हुए जिनमें वे जाना चाहते हैं, या उनकी रुचि का ध्यान करते हुए मैं सम्भावित कार्यशालाओं और परियोजनाओं की योजना बनाती हूँ। कक्षा में बच्चों की सीमित संख्या के चलते प्रत्येक बच्चे पर ध्यान देते हुए शिक्षण सम्भव हो पाता है।

स्लाइड शो, वीडियो, फिल्मों और पुस्तकालयों के माध्यम से विद्यार्थियों का परिचय कला–सिद्धान्त और कला–इतिहास से करवाया जाता है। वे कला के तत्वों, मूल परिप्रेक्ष्य, डिजाइन के सिद्धान्तों के बारे में सीखते हैं; अपनी दक्षता में पैनापन लाने तथा मीडिया के प्रति संवेदनशीलता के लिए कई तरह के अभ्यासों पर कार्य करते हैं। वे भिन्न–भिन्न सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्यों में कला के इतिहास, कला के रूझानों और उसके विकास की पड़ताल करते हैं। उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है कि वे उनके बीच सम्बन्ध स्थापित करें और उनमें समानान्तर रिश्ते को भी देख पाएँ। अन्तर्राष्ट्रीय बकालौरिएत में अनुसन्धान तथा विश्लेषण को विशेष महत्त्व दिया जाता है। विद्यार्थी को दो साल के अन्त पर अपने अवलोकनों, दस्तावेजीकरण की प्रक्रियाओं और नए विचारों की खोज–पड़ताल का सार प्रस्तुत करती हुई एक जाँच–पुस्तक तैयार करना होती है।

कक्षा में दिए गए प्रदर्शन से विद्यार्थियों को सामान्य मीडिया से अवगत करवाया जाता है। प्रयत्न और त्रुटि की प्रक्रिया से गुजरते हुए, करते–करते सीखने के माध्यम से तार, पैकिंग टेप, तथा ऐसे गैर–परम्परागत माध्यमों की पड़ताल की जाती है जिन्हें वर्गीकृत करना भी सम्भव नहीं है। विद्यार्थियों को वस्त्रों, कला–कृतियों के संस्थापन, घटनाओं और प्रदर्शन–कला के साथ प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। समाचार–पत्रों की कतरनों और दीर्घाओं की यात्रा से तथा चोलामण्डल कलाकार–ग्राम जैसे कलाकार–समुदायों के बीच जाने से विद्यार्थी के समकालीन ज्ञान को बढ़ाने तथा नए, उभरते मीडिया के बारे में उनके ज्ञान और जानकारी को बेहतर करने में मदद मिलती है। दो साल के अन्त पर वे अपने कला–कार्य तथा जाँच–पुस्तकों को बाह्य परीक्षक के सम्मुख व्यक्तिगत साक्षात्कार में प्रस्तुत करते हैं। शुरुआत के प्रयोगात्मक कदमों को ध्यान में रखें तो नतीजे बहुत हद तक उल्लेखनीय रहे हैं।

एकाध विद्यार्थी इस ख्याल के तहत इस कोर्स में शामिल होता रहा है कि कला तो 'आसान' होती है। वे धीमे–बोझिल कदमों से चलते रहते हैं और किसी तरह काम चलाते हैं। लेकिन जो इस सागर में गोता लगाने को तैयार होते हैं, उन्हें एक नई भाषा मिलती है – एक ताकतवर आवाज, अपनी राय को लोगों के बीच उठाने का और उनकी प्रतिक्रिया के लिए सतर्क रहने का साहस करती है।

मैं आतुर विद्यार्थियों की कक्षाओं में जाने के लिए उत्सुक रहती हूँ जहाँ मुझे उन्हें सिखाने के मुकाबले उनसे सीखने को अधिक मिलता है। जब वे कला के किसी सिद्धान्त या अवधारणा को जज्ब कर लेने के दिव्यदर्शन जैसे व्यक्तिगत अनुभव से चकराए हुए से घूम रहे होते हैं तो उनके दमकते–चमकते चेहरों को देखकर मुझे बहुत खुशी होती है। कुछ तो इतने उत्साहित, इतनी उमंग में होते हैं कि दिन हो या रात, किसी भी समय मुझे उनका फोन आ सकता है। टूटी हुई हड्डी के परिणामस्वरूप मिली एक्स–रे शीट्स लैम्प–शेड बन जाती हैं, बूढ़े चौकीदारों की साइकिलें कलाकृति संस्थापन का हिस्सा बन जाती हैं, बोतलों के फैंक दिए गए ढक्कन एक सशक्त सार्वजनिक सन्देश बन जाते हैं – कला एक कमाल की चीज है!

अनिशा वर्गीज

एम. कॉवेन्ट एम. इण्टरनैशनल स्कूल, चैन्नई में विजुअल आर्ट शिक्षिका तथा मिडास कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर, चैन्नई में लेक्चरर।

ई–मेल: verani@gmail.com / ***अनुवाद:*** *रमणीक मोहन*